टीपू सुलतान

(ऐतिहासिक नाटक)

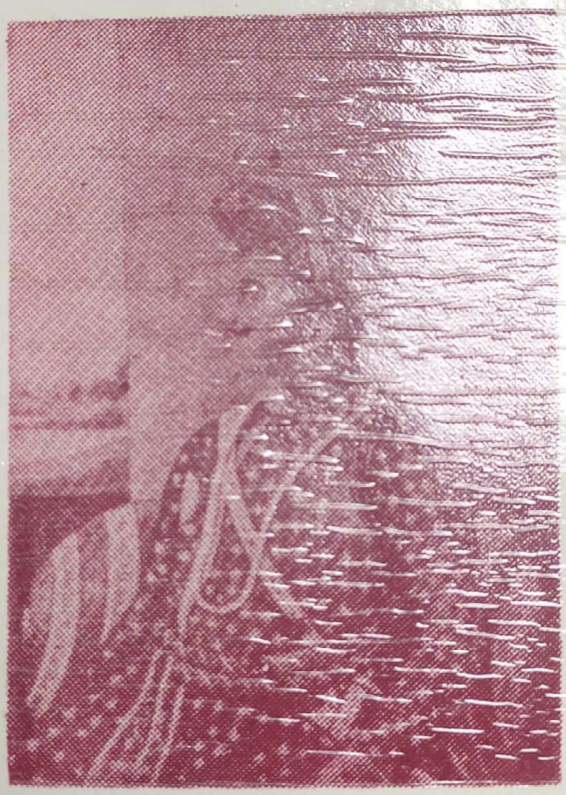

डॉ॰ चतुर्भुज

Scanned with OKEN Scanner

राजभाषा विभाग, बिहार, के अंशानुदान से प्रकाशित

Tipu Sultan

By *Dr. Chaturbhuj*

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण, अगस्त, 2002

मूल्य : पच्चीस रुपये

Printed by
Vatayan,
Adison Arcade, Leyland Compound,
Fraser Road, Patna-800 001
Phone : 227390, 255326

लेखक के दो शब्द

टीपू का जन्म सन् 1749 में हुआ था। इसके पिता का नाम हैदरअली और दादा का नाम फतेह मुहम्मद था। मीर अली रजा खाँ की बहन फातिमा हैदरअली की पत्नी और टीपू की माँ थी। एक मुसलमान फ़क़ीर टीपू मस्तान औलिया के आशीर्वाद से हैदर के घर इस पुत्र का जन्म हुआ था। इसलिए उसका नाम फ़तेहअली टीपू रखा गया। इतिहास में वह टीपू सुल्तान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हैदरअली बड़ा वीर था और जीवन भर अंगरेज़ों का शत्रु बना रहा। अंगरेजों को जगह-जगह बुरी तरह शिकस्त दी। पराक्रम और युद्धकौशल में टीपू अपने पिता से किसी तरह कम नहीं था।

अंगरेजों ने मैसूर के विरुद्ध चार प्रमुख युद्ध किये। जब दूसरा युद्ध चल रहा था तो इसीके बीच हैदरअली की मृत्यु पीठ में एक भयानक घाव हो जाने के कारण युद्ध-शिविर में ही हो गयी। उस समय टीपू अपने पिता से दूर एक स्थल पर युद्ध कर रहा था। उसने युद्ध को जारी रखा।

टीपू ने बार-बार अंगरेजों को पराजित किया। इसलिए अंगरेज किसी तरह इस शत्रु का दमन करना चाहते थे। दक्षिण भारत में अन्य प्रमुख शक्तियां थीं—मराठे और निजाम की। उन्हें भी अलग-अलग टीपू ने पराजित किया था और दोनों शक्तियों को सन्धि करने के लिए वाध्य किया था।

इस बीच लार्ड कार्नवालिस (1786-1793) भारत में गवर्नर-जनरल होकर आया। वह अमेरिका में जार्ज वाशिंटगन से पराजित हो चुका था। तभी संयुक्त राज्य अमेरिका की नींव पड़ी थी। वह भारत में विशेष अधिकार लेकर आया था। वह भारतीय ब्रिटिश सेना का कमाण्डर-इन-चीफ भी था। उसने आते ही टीपू के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई प्रारम्भ कर दी। उसने मराठों और हैदराबाद के निज़ाम को अपनी ओर मिला लिया। इस तरह अंगरेजों की शक्ति में वृद्धि की।

कार्नवालिस ने मराठों और निज़ाम से वादा किया कि जितना इलाका टीपू से जीता जाएगा वह सब कम्पनी, निज़ाम और मराठों में बराबर-बराबर बांट दिया जायेगा। कार्नवालिस का दिया हुआ यह लोभ काम कर गया क्योंकि दोनों टीपू की शक्ति से भयभीत थे। सच्ची बात यह है कि अंगरेज, मराठे और निज़ाम टीपू का समूल नाश चाहते थे। मराठे और निज़ाम यह नहीं समझ रहे थे कि टीपू का सर्वनाश करके अंगरेज चुप बैठने वाले नहीं हैं, बल्कि वे

Scanned with OKEN Scanner

एक-एक कर सभी शक्तियों को समाप्त करके समस्त भारत पर अपना अधिकार करना चाहते हैं।

इनलोगों की मिलीजुली सेना 'ग्रैन्ड आर्मी' के नाम से 1790 ई॰ में जनरल मीडोज़ के अधीन मैसूर पर आक्रमण करने के लिए मद्रास से चली। टीपू ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया। मीडोज़ की भयानक हार हुई। अब कार्नवालिस ने अपने सेनापतित्व में उसी वर्ष टीपू के विरुद्ध कूच किया। षड्यन्त्र और धन का लोभ देकर उसने टीपू के कई लोगों को मिला लिया। कार्नवालिस ने इस युद्ध में टीपू को बुरी तरह पराजित किया और टीपू की राजधानी श्रीरंगपट्टन तक पहुंच गया।

अपमानजनक शर्त्तों के साथ टीपू को सन्धि करनी पड़ी। आधा राज्य देना पड़ा, लगभग तीन करोड़ रुपये दण्डस्वरूप देने पड़े और अदायगी होने तक अपने दो पुत्रों– शाहज़ादे अब्दुल खालिक और शाहजादे मुइज़ुद्दीन को बतौर बन्धक के अंगरेजों के हवाले करने पड़े।

टीपू हार गया था, लेकिन उसका जोश ठण्ढा नहीं हुआ था। वह एक योग्य शासक था। बात का भी धनी था। उसने सन्धि की शर्त्तों का पालन किया। समय के भीतर सारी राशि चुका दी। प्रजा की समृद्धि के लिए अनेक काम किए। उसकी प्रजा खुशहाल थी। भारत में ऐसी कम ही रियासत थी जो टीपू की रिसायत की तरह सुखी थी।

अब भारत का गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेस्ली (1798-1805) था। उसे इंग्लैण्ड में ही टीपू के बारे में पूरी जानकारी मिल गई थी। साथ ही यह संकेत भी मिल चुका था कि इस भयानक शत्रु का पूर्णरूपेण सफाया, जैसे भी हो, कर दिया जाए। वेलेस्ली उचित अवसर की तलाश में था।

वेलेस्ली ने 'सबसीडियरी एलायन्स' (सहायक सन्धि) का फार्मूला लागू किया। इसके द्वारा सभी बड़े-छोटे राज्यों पर यह दबाव डाला गया कि वे इसे मान लें। इसकी शर्त्तों के अनुसार उस राज्य को अपने खर्च पर कम्पनी की फौज रखनी होगी जो बाहरी दुश्मनों से उस राज्य की रक्षा करेगी। साथ ही यह भी अनिवार्य शर्त्त थी कि वह राज्य बिना कम्पनी की सहमति के न तो किसी विदेशी को अपने राज्य में नौकरी दे सकेगा न उससे कोई सम्बन्ध रखेगा।

यह अप्रत्यक्ष रूप से उस राज्य को सदा के लिए कम्पनी का गुलाम बना देना था और कम्पनी के सैनिकों का खर्च भी वहन करना था। टीपू ने साफ तौर से इसे मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह अंगेरजों की धूर्त्तता को समझता था। वह भीतर ही भीतर फ्रेंच से मेलजोल बढ़ा रहा था और यूरोपियन पद्धति से सैन्य संगठन कर रहा था।

वेलेस्ली ने प्रारम्भ में टीपू को मीठी-मीठी बातों में उलझाये रखा। फिर बड़ी तैयारी के साथ श्रीरंगपट्टन की ओर चल पड़ा। बड़े-बड़े प्रलोभन देकर टीपू के विश्वासी व्यक्तियों को अपनी ओर मिला लिया। युद्ध के ऐन अवसर पर उनलोगों ने टीपू को धोखा दिया।

श्रीरंगपट्टन के फाटक पर लड़ते हुए 4 मई 1799 को टीपू मारा गया। उस समय उसकी उम्र लगभग पचास साल की थी। युद्ध के बाद जब उसकी लाश मिली तो दाहिने हाथ में वह कस कर तलवार पकड़े हुए था और बड़ी-बड़ी स्थिर आँखों से देख रहा था। उसकी लाश लालबाग में वहीं दफन की गई जहाँ उसके माँ-बाप और अन्य रिश्तेदारों की कब्रें थीं। टीपू के ध्वज पर 'बाघ' का चिह्न रहता था। यही उसका राजचिह्न था।

टीपू नये विचारोंवाला व्यक्ति था। हैदर अनपढ़ था, लेकिन उसने टीपू को पढ़ाने के लिए मौलवी और पण्डित रखे थे। टीपू ने सुधार के अनेक काम किए। उसके निजी पुस्तकालय में धर्म, इतिहास, सैन्य विज्ञान, औषधि विज्ञान, गणित आदि विषयों की पुस्तकें थीं। इस पुस्तकालय को श्रीरंगपट्टन-विजय के उपरान्त लूटपाट में अंगरेज़ों ने नष्ट कर दिया।

उसने फ्रांस के नेपोलियन बोनापार्ट से अंगरेज़ों के विरुद्ध फ्रेंच सेना की मांग की थी। उसने अपनी राजधानी में 'स्वतंत्रतावृक्ष' लगाया था। टीपू साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक था। वह कहता था कि 'शेर की तरह एक दिन की जिंदगी बेहतर है, लेकिन भेड़ की तरह लंबी जिंदगी जीना अच्छा नहीं है।'– टीपू ने उद्योगों की भी सहयता की। टीपू ने कई मन्दिरों और ब्राह्मणों को दान दिया। मन्दिरों के निर्माण में भी मदद की।

इस नाटक के लेखन में मुझे पत्नी श्रीमती मनोरमा देवी, पुत्र अशोक प्रियदर्शी और कुमार शान्तरक्षित से बड़ा सहयोग मिला। मैं कृतज्ञ हूँ वातायन प्रकाशन के श्री राजेश शुक्ल का तथा उनके सहयोगियों का जिन्होंने रुचि लेकर इस नाटक का इतना शीघ्र प्रकाशन किया।

राजभाषा विभाग, बिहार सरकार ने प्रकाशन-व्यय का एक अंश देकर मुझे प्रोत्साहन दिया। मैं राजभाषा विभाग के अधिकारियों का भी कृतज्ञ हूँ, क्योंकि बिना उस आंशिक अनुदान के इस नाटक का प्रकाशन कठिन था।

106, श्रीकृष्ण नगर,
रोड नं॰-6, पटना-1

– चतुर्भुज
15 अगस्त '2002

Scanned with OKEN Scanner

पात्र-परिचय

टीपू सुल्तान	:	मैसूर के नवाब
पूर्निया	:	टीपू के वज़ीर
मीरसादिक़	:	टीपू के सेनापति
हरिपन्त	:	मराठा-सर्दार
निज़ाम	:	हैदराबाद के शासक
अब्दुल ख़ालिद	:	टीपू के बेटे
मुइज़ुद्दीन	:	
कार्नवालिस	:	ब्रिटिश गवर्नर-जनरल
वेलेस्ली	:	
रुक़ैया बेगम	:	टीपू की बेगम

पहरेदार, सन्तरी, सैनिकगण

टीपू सुल्तान

(ऐतिहासिक नाटक)

पहला दृश्य

स्थान : टीपू का महल

समय : प्रभात

(पक्षियों का कलरव। दूर में अज़ान की आवाज तथा पूजा के वाद्य यंत्र। टीपू सोकर उठे हैं। आँखों में नीन्द। खिड़की से बाहर देखते हैं। रुक़ैया बेगम का प्रवेश। सलाम करना।)

टीपू : सुबह हो गयी।

बेगम : जी हाँ। दूर में अज़ान की आवाज सुनायी पड़ रही है।

टीपू : साथ ही मन्दिरों से पूजा की आवाज भी।

बेगम : हुजूर, आप की आवाज गिरी-गिरी लग रही है। बात क्या है?

टीपू : (गहरी सांस के साथ) तुम ठीक कहती हो बेगम।

बेगम : ऐसा लगता है कि हुजूर रात भर सोये नहीं।

टीपू : नीन्द नहीं आयी रुक़ैया। तुम उधर सोती रहीं और मैं इस खिड़की के पार चाँद को देखता रहा। रात कैसे कट गयी- कुछ पता नहीं चला।

Scanned with OKEN Scanner

बेगम : हुजूर तनहाई में रहे। बाँदी को जगा देते। शायद हुजूर ने मुझे इस क़ाबिल नहीं समझा।

टीपू : ऐसी बात नहीं है रुक़ैया बेगम।

बेगम : फिर क्या बात है?

टीपू : तुम जानती हो कि जब से हमने सल्तनत की बागडोर अपने हाथ में ली, तभी से मेरी नीन्द हराम हो गयी। एक के बाद एक अनेक मुसीबतें आती रहीं। अब तो खेमा ही हमारा घर हो गया, मेरा घोड़ा "दिलकश" रात-दिन का साथी, तलवार है हमदम। ये महल, तुम्हारी मुस्कुराहट, गुदगुदे बिछावन तो जैसे हमसे बिछुड़ ही गये हैं।

बेगम : लेकिन इतने कम वक्त में-इतनी परेशानियों के रहते आपने रियासत के लिए जो कुछ किया-उसे मैसूर के लोग हमेशा-हमेशा याद रखेंगे। सड़कें बनवायीं, यतीमखाने खुलवाये, तिजारत को बढ़ावा दिया, जगह-जगह से बेशुमार किताबें मंगवायीं। जहाँ फौजी कानून के सिवा और कुछ न था, आपने नये कानून बनवाये। रियाया की हिफाजत और भलाई के लिए बहुत कुछ किया। ये सब चीजें सुल्तान के नाम में चार चाँद लगा रही हैं।

टीपू : तुम नहीं जानतीं बेगम-हमारे अब्बाजान मरहूम हैदरअली खाँ एक मामूली सिपाही थे। पढ़ने लिखने का उन्हें मौका ही नहीं मिला। अपनी मेहनत से वो सिपहसलार बने। मैसूर के खराब हालात देखकर उन्होंने इसकी हुकूमत का जिम्मा अपने कन्धों पर लिया। वो चाहते थे कि उनका बेटा तलवार का ही धनी नहीं हो, बल्के अदब और हुनर का भी पारखी हो। हिन्दू और मुसलमान-दोनों के दिलों में उसकी जगह हो।

बेगम : हमें मालूम है कि हुजूर के मरहूम अब्बाजान की फौज में अनेक मराठे काम करते थे और उनका उन पर पूरा भरोसा था।

टीपू : तुम जानती हो कि हमारे बचपन के गुरु कौन थे?

बेगम : हुजूर ने कभी बताया ही नहीं।

टीपू : हमारे दो गुरु थे। हम सात साल तक एक साथ उन दोनों

से पढ़ते रहे। वो थे- मौलवी अब्दुल्ला और पण्डित गोवर्धन। दोनों एक दूसरे की बड़ी इज्जत करते थे। कभी-कभी उन दोनों में नोक-झोंक भी होती थी। लेकिन तुरत दोनों में मेल हो जाया करता था।

बेगम : यह तो एक अजीब मिसाल है।

टीपू : और यही वजह है कि मैं दोनों मजहब की क़द्र करता हूँ। तुम जानती हो कि अपना दीवान पूर्निया कौन है?

बेगम : कौन है?

टीपू : एक ब्राह्मण। अब्बाजान बिना इससे पूछे कुछ नहीं करते थे।

बेगम : शायद इसीलिये सुल्तान भी इसकी इज्जत करते हैं।

टीपू : अब्बाजान मेरी गैरहाजिरी में मरे। रिश्तेदारों ने और दूसरे दरबारियों ने साजिश करके मुझे तख्तोताज से महरूम करना चाहा। उस वक्त इसी पूर्निया ने रातो-रात जाकर हमें खबर दी और अपने साथ लाकर हमारी ताजपोशी की। इतना ही नहीं, आज तक वह खैरख्वाह बना है। और इसी से हमने उसे अपना वज़ीर बनाया है।

बेगम : जानती हूँ, हुजूर पूर्निया से मशविरा लिये बगैर कोई काम नहीं करते।

टीपू : लेकिन इस सल्तनत पर एक नापाक साया मंड़रा रहा है बेगम।

बेगम : नापाक साया?

टीपू : हाँ, ये मुट्ठी भर अंगरेज तिजारत के बहाने इस मुल्क में आये। आपस में यहाँ के लोगों को लड़ाते रहे और आहिस्ता-आहिस्ता हुकूमत में दखल देने लगे। तुम जानती हो कि हमारे मरहूम अब्बा इन फिरंगियों के कैसे दुश्मन थे? जगह-जगह पर उन्हें शिकस्त दी। एक जंग में उन्होंने मद्रास के गवर्नर को भी कदमबोसी के लिए मजबूर किया और उनसे अपनी शर्तें मनवायीं। हमने भी जंग जारी रखी। बाद में सुलह हुई।

Scanned with OKEN Scanner

बेगम : इन अंगरेजों के हौसले बड़े बुलन्द हैं हुजूर।

टीपू : इतना ही नहीं, ये बहाने ढूँढ़ ढूँढ़ कर लड़ते हैं। अभी अंगरेजों का गवर्नर-जनरल कार्नवालिस है। वह अंगरेजों की शिकस्त का बदला लेना चाहता है। सुना है, उसने मराठों और हैदराबाद के निज़ाम से सुलह कर ली है।

बेगम : हुजूर ने तो मराठों को भी शिकस्त दी थी।

टीपू : निज़ाम की फौज को भी हमने शिकस्त दी थी। दोनों से हमारी सुलह हो चुकी है। लेकिन सुलहनामे की स्याही सूखने भी नहीं पायी कि दोनों कार्नवालिस से मिल गये। यही फिक्र हमें परेशान कर रही है।

बेगम : लेकिन, हम उन दोनों को अंगरेजों की नीयत के बारे में आगाह तो कर सकते हैं।

टीपू : हाँ, कर सकते हैं। मराठों में इतनी समझ है कि वे बात को समझें। लेकिन, निज़ाम में इस समझ की कमी है। वो हमारी बात कभी नहीं मानेंगे।

बेगम : क्या निज़ाम को समझाने का कोई तरीका नहीं है?

टीपू : एक ही तरीका है बेगम।

बेगम : क्या?

टीपू : जंग। हम मैसूर को खून-खराबे में घसीटना नहीं चाहते हैं। लेकिन अंगरेज जो कुछ कर रहे हैं- उसका दूसरा इलाज नहीं है। लगता है, एक बार फिर दकन की धरती पर तोपें गरजेंगी। और वह जंग खतरनाक होगी। सारा दकन आग के उस शोले में धधक उठेगा।

बेगम : जंग के नाम से तो मेरी रूह काँप उठती है। क्या.....

टीपू : क्या तुम समझती हो कि हम जंग चाहते हैं? लेकिन खतरनाक ज़ख्म से छुटकारा पाने के लिए कभी-कभी नश्तर जरूरी होता है। अगर अंगरेज मैसूर पर हमला करेंगे तो हम भी चुप नहीं बैठेंगे। हमारी तोपें भी गरजने के लिए तैयार हैं। हमारी तलवारें भी दुश्मन का खून पीने के लिये तैयार हैं।

(एक पहरेदार का प्रवेश। आकर कोर्निश करना)

टीपू : क्या बात है?

पहरेदार : गुस्ताखी माफ हो हुजूर। वजीर पूर्निया साहब हुजूर की कदमबोसी करना चाहते हैं।

टीपू : आने दिया जाये। बेगम, वज़ीर पूर्निया आ रहे हैं। तुम अन्दर जाओ। **(एक ओर पहरेदार का प्रस्थान। दूसरी ओर बेगम का प्रस्थान। पूर्निया का प्रवेश)**

पूर्निया : **(सलाम करते हुए)** सुल्तान की खिदमत में वज़ीर पूर्निया आदाब अर्ज करता है।

टीपू : आइये वज़ीर साहब। कोई नई खबर?

पूर्निया : हुजूर की फौज ने महाराजा ट्रावनकोर की शान मिट्टी में मिला दी है। मैसूर का शाही झंडा ट्रावनकोर के क़िले पर लहरा रहा है।

टीपू : हम इस खबर के लिए आपके शुक्रगुजार हैं वज़ीर पूर्निया। लेकिन ट्रावनकोर के महाराजा का क्या हुआ?

पूर्निया : वो भाग गये हुजूर।

टीपू : बुरा हुआ वज़ीर साहब। अंगरेजों को एक और बहाना मिल जायेगा। महाराजा अंगरेजों से मदद मागेंगे।

पूर्निया : हुजूर ठीक फरमाते हैं। लेकिन हम कुछ न कर सके। ट्रावनकोर को जीतने के लिए हमारी फौज के सैकड़ों बहादुर शहीद हुए हैं।

टीपू : हम अपने सिपाहियों की बहादुरी के कायल हैं। आप इन सब के परिवार की परवरिश का पूरा इन्तेजाम कर दें। किसी को कोई तकलीफ न होने पाये।

पूर्निया : हुजूर के हुक्म का पालन किया जायेगा।

टीपू : और देखिये, अंगरेज चुप नहीं बैठेंगे। सुना है, निजाम और मराठे भी उनसे मिल गये। ट्रावनकोर के महाराज भी उनसे मिल जायेंगे। हमें खबरदार रहना होगा।

पूर्निया : आप सही फर्माते हैं। हम हर तरह से तैयार हैं।

Scanned with OKEN Scanner

दूसरा दृश्य

स्थान : ब्रिटिश कैम्प

(लार्ड कार्नवालिस टहल रहे हैं। बूट की आवाज सुनाई पड़ रही है।)

कार्नवालिस : टीपू सुल्टान आफ माइसूर। सन ऑफ हायडार अली खान। आई सी। लायन आफ माइसूर। गुड! हम चार साल इण्डिया में खटम किया। फोर इंयर्स। जीज़ेज क्राइस्ट।- आई ऐम ए मैन ऑफ वार। बट नो वार फौर फोर इयर्स। नाउ आल प्रिपेरेशन्स कम्पलीट। सब फौजी टैयारी पूरा। हम अंगरेज के डीफीट का बडला लेगा। बडला। रिवेन्ज। कौन हाय?

(एक संतरी का प्रवेश। सैल्यूट करना)

संतरी : सर.....

कार्नवा॰ : क्या मांगटा मैन?

संतरी : निज़ाम साहब और मराठा सेनापति, साहब से भेंट करना चाहते हैं।

कार्नवा॰ : मराठा कमान्डर मिस्टर हरिपन्ट? गुड! सबको आने मांगटा।

(संतरी का प्रस्थान। कार्नवालिस टहलते रहते हैं। कुछ ही देर में निजाम और हरिपन्त का प्रवेश। दोनों सलाम करते हैं।)

निज़ाम : हम गवर्नर जनरल साहब को सलाम करते हैं।

हरिपन्त : मराठा सेनापति हरिपन्त आपको नमस्कार करता है।

कार्नवा॰ : (हंसते हुए) माई फ्रेन्ड्स! हैन्ड्स प्लीज। गुड! (हाथ मिलाते हैं।)

निज़ाम : हुजूर, बहुत बुरी खबर है।

कार्नवा : बुरी खबर? बैड न्यूज? हमारे फ्रेन्ड को बैड न्यूज क्या होने सकटा?

निज़ाम : महाराजा ट्रावनकोर को टीपू ने शिकस्त दे दी।

कार्नवा॰ : ट्रावनकोर। वह ईस्टइण्डिया कम्पनी का फ्रेन्ड हाय। टीपू हैज कमीटेड ए ग्रेट ब्लन्डर।

निज़ाम : कुछ कीजिये गवर्नर साहब।

कार्नवा॰ : हम गवर्नर नई-हम है गवर्नर-जनरल। निजाम बहादुर, आप आगे से गलट नई बोलेगा। आप याड रखेगा- हम हाय लार्ड चार्ल्स कार्नवालिस, गवर्नर-जनरल ऐण्ड कमान्डर-इन-चीफ आफ ब्रिटिश इण्डिया। समझे?

निजाम : समझ गया हुजूर। अब आगे ऐसी ग़लती नहीं होगी।

कार्नवा॰ : करेक्ट। हम टीपू के पास लेटर भेजा। ट्रावनकोर का किंगडम महाराजा को लौटाना होगा। उसका पूरा नुकसान डेना होगा और महाराजा से माफी मांगना होगा।

हरिपन्त : क्या साहब बहादुर यह समझते हैं कि मैसूर के सुल्तान, महाराजा से माफी मागेंगे?

कार्नवा॰ : नहीं मांगेगा- हम भी यही चाहटा।

हरिपन्त : उससे आपको क्या लाभ होगा?

कार्नवा॰ : मराठा हमारा साठ। निजाम बहादुर का फौज हमारा साठ। हम सब मिल कर माइसूर पर अटैक करेगा। टीपू सुल्तान को फिनिश करेगा।

निज़ाम : गवर्नर-जनरल साहब, सच कहता हूँ-टीपू तूफान है। जिधर जाता है, तबाही ला देता है। हमारी सल्तनत का वह सबसे बड़ा दुश्मन है। हरिपन्त साहब, टीपू की निस्बत आपका क्या ख्याल है?

हरिपन्त : निज़ाम साहब का कहना दुरुस्त है जनरल साहब। मराठों

Scanned with OKEN Scanner

का भी वह सबसे बड़ा दुश्मन है। फिर भी मराठों के वज़ीर नाना फड़नवीस, टीपू को इज्जत की निगाह से देखते हैं।

कार्नवा॰ : हाउ इज़ इट? नाना फड़नवीस पेशवा डरबार का प्राइम मिनिस्टर हाय और आप उसका कमान्डर। फिर आप कैसे हमारे कैम्प में आया?

हरिपन्त : नाना फड़नवीस से हमारी नहीं बनती है। इसी से टीपू को समाप्त करने के लिए मैं आपकी मदद कर रहा हूँ।

कार्नवा॰ : (अट्टहास) वेरी गुड। आप जाडा समझ वाला आडमी हाय। दैट्स गुड। हम जान गया- आप डोनों को टीपू से फीयर-मटलब डर होने सकटा। ऐम आई राइट निजाम बहाडुर?

निज़ाम : साहब ने बिल्कुल दुरुस्त फरमाया।

कार्नवा॰ : आपको एक बाट बटाने मांगटा। टीपू का पूरा हाल हमारा इंग्लैण्ड में पहुँचा। तब हमको भेजा आपके मुलुक में। हमको डोनों पावर मिला। हाम गवर्नर-जनरल हाय और गोरा फौज का कमान्डर-इन-चीफ। अमेरिका में चार्ज वाशिंगटन से जंग किया। आप जानटा? एक ब्रेव फेलो।

हरिपन्त : सुना है कि हुजूर अमेरिका की जंग हार कर लौटे हैं।

कार्नवा॰ : योर इन्टेलिजेन्स इज करेक्ट मिस्टर हरिपन्त। आप जानटा कि जब डो बहाडुर जंग करटा टो एक का जीट होटा और डूसरा का हार। इट्स ए क्लियर गेम। वन विन्स ऐण्ड द अदर लूज़ेज।

हरिपन्त : आप टीपू के साथ युद्ध करना चाहते हैं। आप क्या टीपू की शक्ति को जानते हैं? उसने पहले के युद्धों में अंगरेजों को पराजित किया है। निजाम साहब की फौज और मराठा फौज भी उसके सामने नाकामयाब हुई। फिर आप किस उम्मीद पर टीपू को समाप्त करना चाहते हैं?

कार्नवा॰ : मिस्टर हरिपन्त, आप हमारा फौजी टैयारी नई जानटा। आई

हैव ब्रौट न्यू ट्रूप्स फ्रोम इंग्लैण्ड। इन दीज़ फोर इयर्स आई हैव क्लेक्टेड ह्यूज आर्म्स। हमारा पास काफी टैयारी होना सकटा। फिर आप डोनों का पूरा फोर्स भी हमारा साठ। सो यू डोन्ट वरी। विक्ट्री विल बी आवर्स। देयर इज ऐबसोल्यूटली नो डाउट एबाउट इट।

निज़ाम : हम दोनों की फौजें आपके इशारे पर काम करेंगी। इसका हम दोनों यकीन दिलाते हैं।

हरिपन्त : मराठा फ़ौज आपके इशारे पर काम करेगी जनरल साहब।

कार्नवा॰ : गोरा फौज, निजाम बहादुर का फौज और आपका फौज का नाम ग्रैण्ड आर्मी होने सकटा। ग्रैण्ड आर्मी मटलब बहुत बड़ा फौज। ट्रावनकोर के बारे में टीपू का रिप्लाई मिलना का साठ ग्रैण्ड आर्मी मार्च करेगा। वी शैल मार्च ऐज सून ऐज टीपूज रिप्लाई इज़ इन माई हैण्ड।

(एक सैनिक का प्रवेश। हाथ में एक पत्र। वह सलाम करके पत्र कार्नवालिस को देता है। फिर चला जाता है। कार्नवालिस पत्र पढ़ता है। फिर जोर से अट्टहास करता है।)

निज़ाम : साहब बहादुर, क्या बात है?

हरिपन्त : आप इतने प्रसन्न क्यों हैं जनरल साहब?

कार्नवा॰ : जो हम चाहटा ठा, वह हो गया।

निज़ाम : हम समझे नहीं साहब बहादुर।

हरिपन्त : इसका समझना क्या इतना मुश्किल है निजाम साहब?

निज़ाम : तुम क्या समझे हरिपन्त?

हरिपन्त : साहब के मन की मुराद पूरी होने वाली है याने टीपू का खत आ गया है।

कार्नवा॰ : राइट। टीपू का जवाब आ गया। टीपू बोलटा गैरमुल्की लोग को उसके काम-काज में दखल डेने का हक नई। मराठा और निजाम से उसका ट्रीटी हो चुका। फिर बोलटा महाराजा ट्रांवनकोर के रिक्वेस्ट पर उसका राज लौटाने को

Scanned with OKEN Scanner

टैयार। हमारा हुकुम नई मानेगा। मटलब जंग-जंग जो हम चाहटा। **(अट्टहास)**

निज़ाम : टीपू से हमारी सुलह हुई और अब टूट गई।

हरिपन्त : टीपू से मराठों की भी सुलह हुई और अब टूट गई। टीपू हम दोनों का दुश्मन है।

कार्नवा॰ : निजाम बहादुर और मिस्टर हरिपन्ट, टीपू का जवाब आ गया। हम माइसूर पर अटैक करेगा। आपका दुश्मन को फिनिश करेगा। मेजर-जनरल विलियम मीडोज़ को हम चीफ आफ दि ग्रैण्ड आर्मी एपॉयन्ट करटा। वी ऑल विल मार्च टू माइसूर। नाउ ब्लो अप सिरिरंगपट्टन-दि कैपिटल ऑफ माइसूर। कैप्चर दि लायन ऑफ माइसूर। मार्च ऐटवन्स।

(प्रस्थान। निजाम और हरिपन्त आपस में बातें करते हुए दूसरी ओर से प्रस्थान करते हैं।)

तीसरा दृश्य

स्थान : रणक्षेत्र का एक भाग **समय** : दोपहर

(टीपू सुल्तान अपनी सेना को संबोधित कर रहे हैं।)

टीपू : बहादुरों, आज मैसूर खतरे में है। हिन्दू और मुसलमान-दोनों से टीपू सुल्तान इल्तिजा करता है कि दुश्मनों को शिकस्त दो। इन गोरों की चाल को नाकाम कर दो। निजाम और मराठे इन गोरों के साथ हैं। इन सबसे तुम्हें जंग करनी है। आगे बढ़ो। मैसूर ज़िन्दाबाद-हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद! क़ौमी एकता ज़िन्दाबाद।

सब : टीपू सुल्तान ज़िन्दाबाद। शेरे मैसूर ज़िन्दाबाद।

(रणघोष। तोपों और बन्दूकों की आवाज। अन्धकार और प्रकाश। युद्ध का दृश्य। कार्नवालिस, हरिपन्त, निजाम खड़े-खड़े बातें कर रहे हैं।)

कार्नवा॰ : आई सी। मीडोज़ लौस्ट दि बैट्ल। टीपू का विक्ट्री हुआ। ब्लाडीफूल।

हरिपन्त : गवर्नर-जनरल साहब, अंगरेजों की हार हुई। टीपू जीत गया। अब हमें पूना वापस लौटने का हुक्म दें। हमें अफसोस है कि हमारी मदद के बावजूद आप कुछ न कर सके। बताइये, पेशवा दरबार में हम क्या उत्तर देंगे।

निज़ाम : हरिपन्त साहब ठीक कहते हैं हुजूर। अब हम भी हैदराबाद लौटना चाहते हैं।

कार्नवा॰ : नो। यू कान्ट गो बैक। आप सब वापस जाने बोलटा। ये

Scanned with OKEN Scanner

जंग हम आपके खाटिर किया। आगे की जंग में हम खुद जायेगा। आई शैल लीड दि आर्मी ऐगेन्स्ट टीपू। हम खुद फौज को कमाण्ड करेगा। चार्ल्स कार्नवालिस का प्रौमिस हाय-विक्ट्री और डेथ। फटेह या मौट। आप इसको सच मानेगा। हाँ, बैट्ल में आप डोनों हमारा साठ होगा। राईट।

निज़ाम : क्या कहते हो हरिपन्त?

हरिपन्त : **(निजाम के कान में)** अंगरेजों का कुछ भरोसा नहीं है। आज इधर, कल उधर। हमलोग तो कहीं के नहीं रहे। टीपू के साथ की गई सुलह भी टूट गयी। दोष तो हम ही लोगों का है। टीपू ने बार-बार सुलह की याद दिलाई थी।

निज़ाम : हमारी भी तो टीपू के साथ सुलह हुई थी। हमने भी सुलह को तोड़ा। अब क्या होगा?

हरिपन्त : निजाम साहब, कार्नवालिस साहब का भरोसा, लगता है करना ही होगा। हमलोग इन गोरों को नाराज कर सकुशल जा भी नहीं सकते।

कार्नवा॰ : आपलोग आपस में क्या बात करता? हम कुछ समझ नहीं।

हरिपन्त : हमलोग यही सोच रहे थे कि इस हार के बाद क्या करना चाहिये।

कार्नवा॰ : ट्रस्ट मी। हम आगे का बैट्ल खुड कमाण्ड करेगा। हमारा ज़ीट होगा-आपको यकीन डिलाटा। अगर हमारा हार हो तो हम रिजाइन देकर इंग्लैण्ड चला जायेगा। इण्डिया लौट कर नहीं आयेगा। यह बैट्ल हमारा प्रेस्टिज का साठ जुड़ा हाय। आप हमारा साठ डीजिये।

निज़ाम : ठीक है। हम आपका यकीन करते हैं। आपका साथ देंगे।

हरिपन्त : हम भी आपका साथ देंगे।

चौथा दृश्य

स्थान : शिविर **समय** : रात

(टीपू सुल्तान और दीवान पूर्निया बातें कर रहे हैं।)

पूर्निया : हुजूर, मैं ठीक कह रहा हूँ। यकीन कीजिये।

टीपू : दीवान पूर्निया, मुझे यकीन नहीं होता कि कार्नवालिस खुद जंग में आयेगा।

पूर्निया : सुल्तान, निजाम और मराठे गोरों के साथ हैं। उनके साथ बेशुमार सेना है, बड़ी-बड़ी तोपें हैं। मिडोज़ की हार से नाराज होकर कार्नवालिस ने जंग की कमान अपने हाथ में ली है। मेरे दूतों ने सही खबर दी है।

टीपू : मिडोज़ के हमले से हम अभी तक संभल नहीं पाये थे दीवान साहब कि यह नई मुसीबत आ गई। बार-बार की जंग से मैसूर बर्बाद हो रहा है, कमजोर हो रहा है। इसकी फसलें नष्ट हो रही हैं। इतना बड़ा मुल्क है। लेकिन हमें कहीं से कोई मदद नहीं मिल रही है। लगता है, सारा मुल्क हमारी बर्बादी का तमाशा देख रहा है। निजाम को देखो। मराठों को देखो। वे सब हिन्दुस्तानी हैं। लेकिन वे हमारी मदद नहीं कर के इन गैरमुल्की लोगों की मदद कर रहे हैं। अगर हमारी मदद नहीं करके वो सब जंग से अलग भी रहते तो हम अंगरेजों को सबक सिखा पाते।

पूर्निया : हुजूर ठीक फरमाते हैं। उनसे अच्छे तो ये फ्रान्सिसी हैं जो नमक की कीमत चुका रहे हैं, हमारी मदद कर रहे हैं।

Scanned with OKEN Scanner

टीपू : हमारी एक राय है दीवान साहब।

पूर्निया : क्या?

टीपू : निजाम नासमझ हैं। वो हमारी बर्बादी चाहते हैं, लेकिन मराठे बात को समझ सकते हैं। क्या आप किसी को हरिपन्त के पास भेज सकते हैं?

पूर्निया : आपका हुक्म मिलने पर मैं खुद जा सकता हूँ।

टीपू : उससे मिलने में आपकी जान खतरे में पड़ सकती है।

पूर्निया : जानता हूँ कि हरिपन्त अंगरेजों से मिला हुआ है और उससे भेंट करना खतरे को बुलाना है। लेकिन मैं डरता नहीं। आपके मरहूम अब्बाजान का और आपका नमक मेरी नसों में है। अगर इस काम में मेरी जान भी चली जाये तो पुण्य ही होगा।

टीपू : मुझे आप पर पूरा भरोसा है दीवान साहब। हम आपकी वापसी का इन्तजार करेंगे। इस बीच जंगी तैयारी भी होगी।

(अन्धकार। प्रकाश। हरिपन्त और पूर्निया बैठे नजर आते हैं।)

पूर्निया : मराठा-सेनापति हरिपन्त जी को मैसूर के दीवान पूर्निया का नमस्कार।

हरिपन्त : दीवान पूर्निया जी को हरिपन्त का प्रणाम। दीवान साहब कहिये क्या हाल है? सुल्तान टीपू तो सानन्द हैं?

पूर्निया : (कुछ हंसकर) सानन्द? सेनापति महोदय, जिसके चार तरफ दुश्मन हों, वह क्या आनन्द से रह सकता है?

हरिपन्त : क्या मतलब?

पूर्निया : मतलब समझना क्या इतना कठिन है हरिपन्त जी? जब देशवासी अपने देशवासी की गर्दन पर छुरी चलायें तो क्या होगा? आप ही बतायें।

हरिपन्त : देशवासियों का सर्वनाश होगा। देश का पतन होगा।

पूर्निया : यदि आप अपने कथन को सच मानते हैं तो फिर इस युद्ध में इन विदेशियों की मदद क्यों कर रहे हैं?-उत्तर दीजिये

हरिपन्त : (चुप)

पूर्निया : आप चुप हैं। आश्चर्य है। क्या मैं इसका अर्थ यह लगा लूं कि आप सुल्तान टीपू का सर्वनाश चाहते हैं और अंगरेजों की विजय?

हरिपन्त : **(रुंधी आवाज)** दीवान जी, आपने मेरे अन्तर्मन का स्पर्श किया है। अंगरेजों के आश्वासन पर मैं उनका साथ दे रहा हूँ।

पूर्निया : किस आश्वासन पर? क्या मैसूर जीत कर कार्नवालिस आपको वहाँ का राज्य दे देगा? क्या मैसूर को समाप्त करने के बाद अंगरेजों का एक प्रबल शत्रु समाप्त नहीं हो जायेगा? आज अंगरेज उससे डरते हैं, क्या उनका डर समाप्त नहीं हो जायेगा? वैसी स्थिति में क्या कार्नवालिस मराठों को भी समाप्त करना नहीं चाहेगा? जान लीजिये, अंगरेज किसी के मित्र नहीं हैं। वे सभी हिन्दुस्तानी शक्तियों को समाप्त करके अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं।

हरिपन्त : लगता है, आप ठीक कहते हैं।

पूर्निया : लगता नहीं है, बल्कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह होने वाला है।

हरिपन्त : दीवान साहब, सुल्तान टीपू ने मराठों को पराजित किया। उस पराजय का प्रतिशोध लेना मेरा उद्देश्य था। इसलिये मैंने अंगरेजों का साथ दिया। नाना फड़नवीस चाहते थे कि टीपू की मदद की जाये, लेकिन दुर्भाग्यवश मैंने उनकी सलाह नहीं मानी। आपकी बातों से मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ है। लेकिन खेद है, अब मैं कुछ नहीं कर सकता।

पूर्निया : क्यों नहीं कर सकते?

रपन्त : आप ही बतायें, क्या कर सकता हूँ।

र्निया : आप अंगरेजों का साथ छोड़ सकते हैं। वापस पूना जा सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

हरिपन्त : यह काम इतना आसन नहीं है दीवान साहब। इस त्रिकोन में निजाम भी हैं। वे कार्नवालिस का साथ नहीं छोड़ेंगे। कार्नवालिस निजाम पर तो विश्वास करता है, पर हम पर विश्वास नहीं करता। इसलिये उसने हमारी फौज के आसपास गोरों की टुकड़ियाँ लगा दी हैं। हमारे चारो तरफ कार्नवालिस और निजाम के गुप्तचर फैले हैं।

पूर्निया : इतना सब कुछ होने पर भी आप गोरों का साथ दे रहे हैं? क्या मराठों का आत्मसम्मान इतना गिर गया?

हरिपन्त : मराठों का नहीं, मेरा आत्मसम्मान सचमुच नष्ट हो गया-ऐसा लगता है।

पूर्निया : हरिपन्त जी, मराठों की वीरता किसी से छिपी नहीं है। अगर मराठे और सुल्तान टीपू मिलकर युद्ध करें तो कार्नवालिस और निजाम की पराजय निश्चित है। युद्ध का सारा दृश्य ही बदल सकता है।

हरिपन्त : आपका अन्दाज़ा सही है दीवान साहब। लेकिन मैं लाचार हूँ। कुछ कर नहीं सकता। हाँ, एक काम हो सकता है।

पूर्निया : वह क्या?

हरिपन्त : मैं रहूँगा गोरों के साथ। लेकिन निष्क्रिय रहूँगा।

पूर्निया : हरिपन्त जी, बहुत आशा लेकर आया था। लेकिन निराश होकर लौट रहा हूँ। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम क्षुद्र प्रतिशोध के लिए अपने देश की आजादी को बेचने जा रहे हैं, अपने देशवासियों के गले में गुलामी की जंजीर लगाने जा रहे हैं। इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। कभी माफ नहीं करेगा। नमस्कार। **(प्रस्थान)**

पाँचवाँ दृश्य

स्थान : टीपू का शिविर

(टीपू और दीवान पूर्निया बातें कर रहे हैं। दूर में रणघोष)

टीपू : दीवान साहब, आपसे मेरी एक इल्तिजा है।

पूर्निया : हुक्म कीजिये सुल्तान। आपके लिए बन्दा अपनी जान तक दे सकता है।

टीपू : जानता हूँ। इसीलिये यह काम आपको सुपुर्द कर रहा हूँ। पता नहीं, जंग का नतीजा क्या हो! इसलिये मैं चाहता हूँ कि आप बेगम और मेरे बच्चों को लेकर, किसी महफूज जगह में चले जायें ताकि चिराग़ बुझने पर कम से कम उसकी लौ बाकी रह जाये।

बेगम : **(प्रवेश करती हुई)** यह कभी नहीं होगा।

टीपू : कौन? रुक़ैया बेगम?

बेगम : जी हुजूर, आपकी बाँदी। सुल्तान का यह फैसला है–हुजूर जंग करें और मैं जान बचा कर भाग जाऊँ? यह कभी नहीं होगा।

टीपू : बेगम, बात को समझो। गोरों की बहुत बड़ी फौज हमें घेर चुकी है। जंग में कौन कहाँ रहेगा-कहना मुश्किल है। क्या अंजाम होगा- यह भी कहना मुश्किल है। फिर तुम्हारा ख्याल कौन करेगा? तुम्हारी जान और तुम्हारे बेटों की जान खतरे में है। जान लो।

Scanned with OKEN Scanner

बेगम : मुझे उसकी फिक्र नहीं है। फिक्र आपकी है। ऐसी परेशानी में आपको छोड़कर मैं कहीं नहीं जा सकती। मेरे सरताज, आप मेरी फिक्र छोड़ दें। बच्चों की फिक्र छोड़ दें। मैसूर की धरती आपसे मदद की भीख मांग रही है। सारा हिन्दुस्तान आपकी तरफ हसरतभरी निगाह से देख रहा है। मुल्क पहले है, मैं बाद में हूँ।

पूर्निया : बेगम का कहना दुरुस्त है हुजूर। बेगम महल में ही रहें। हमारे खास आदमी इनकी हिफाजत करेंगे जो जान दे देंगे, पर बेगम का बाल बांका नहीं होने देंगे। आप मेरा विश्वास करें।

टीपू : ठीक है। आप जो मुनासिब समझें, करें।

(रणघोष निकटतर। बेगम और पूर्निया का प्रस्थान।)

टीपू : लगता है, अंगरेज निकट आ गये। देखो, सामने घोड़े पर सवार कार्नवालिस है। अगल-बगल निजाम और हरिपन्त हैं। जंग तेजी पर है। **(चिल्लाकर)** कृष्णराव, ग़ाज़ी खाँ, आगे बढ़ो। विश्वनाथ, अबू मुहम्मद, अंगरेजों पर पीछे से हमला करो। सामने देखो, घोड़े पर सवार कार्नवालिस है। उसे घेर लो। **(रणघोष पूर्ववत्)**

(पूर्निया का पुनः प्रवेश)

पूर्निया : सुल्तान, बहुत बुरी खबर है?

टीपू : कैसी खबर?

पूर्निया : कृष्णराव और विश्वनाथ लड़ते हुए मारे गये।

टीपू : ओह....। हमारे दो खास सरदारों की मौत हुई।

पूर्निया : हुजूर.....

टीपू : और क्या कहना चाहते हैं आप?

पूर्निया : बेगम जब महल से जंग देख रही थीं तो अचानक तोप का एक गोला वहाँ गिरा। बेगम बुरी तरह ज़ख्मी हो गयी हैं। घायल बेगम इधर ही आ रही हैं।

(घायल रुकैया बेगम का प्रवेश)

बेगम : आह! सारा बदन जल रहा है। आह!

टीपू : रुक़ैया बेगम? यह तुमने क्या कर लिया?

बेगम : मेरे सरताज, मैं जंग का नज़ारा देखने में मशगुल थी। पता नहीं, कहाँ से एक गोला छत पर आकर फटा और मैं घायल होकर गिर पड़ी।

टीपू : बेगम, तुमने यह खुदकुशी क्यों की? जंग के नज़ारे को देखना क्या ज़रूरी था?

बेगम : सुल्तान, आप मुझसे मुहब्बत करते हैं। मुझे लगा कि मेरी मुहब्बत आपकी राह में काँटा है। इसी से दीवान पूर्निया की मार्फत आप मुझे दूर हटाना चाहते थे। खुदा ने मेरी आरजू सुन ली। खुद ब खुद मैं दूर जा रही हूँ। आह!

टीपू : **(चीख कर)** नहीं, यह नहीं हो सकता बेगम। मैं मैसूर के तख्तोताज को छोड़ सकता हूँ, लेकिन तुमको, जिसने कदम-कदम पर मुझे सहारा दिया- ओह, मैं कभी नहीं छोड़ सकता। दीवान साहब, महल पर सुलह का झंडा फहराइये। ऐलान कर दीजिये कि टीपू हार गया। हाँ-हाँ, **(रूद्ध स्वर)** टीपू हार गया। जंग बन्द कर दी जाये।

बेगम : मेरे मालिक, ऐसा हर्गिज-हर्गिज मत कीजिये। एक बेगम जायेगी, दूसरी आयेगी। लेकिन इस शिकस्त को आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। आह! आह! जैसे पूरे बदन में आग लगी हो-आह! **(रो पड़ती है- सिसकियाँ)** मेरी फिक्र न करें। ख़ता माफ हो। अलविदा **(मृत्यु)**

टीपू : **(चीख कर)** बेगम! ओह! या खुदा! यह मेरे किस गुनाह की सजा है? दीवान साहब, फौरन किसी को कार्नवालिस के पास भेजिये। किसी भी शर्त पर सुलह को अंजाम दीजिये। महल पर सुलह का झंडा फहराइये। जाइये।

(पूर्निया का प्रस्थान। अंधकार।)

Scanned with OKEN Scanner

छठा दृश्य

स्थान : ब्रिटिश शिविर **समय:** संध्या

(कार्नवालिस टहल रहा है। बूट की आवाज)

कार्नवालिस : **(अट्टहास)** माई फ्रेण्ड्स। थर्ड वार आप माइसूर इज ओवर। टीपू डीफीटेड। टीपू का हारा हमारा जीट। हमारा नई-आपका जीट। निजाम बहादुर का जीट। मराठा का जीट। टीपू वेरी क्लेवर। हम उसके फोर्ट में घुसनेवाला कि वह बैनर आफ फ्रीस डेखाया-सुलह का झंडा। हम अंगरेज सुलह के झंडा का आडर करटा। इज्जट डेटा। हम टुरट आर्डर डिया। सीज़ फायर। जंग बण्ड करो।

हरिपन्त : गवर्नर-जनरल साहब, यह आपकी बहादुरी थी कि जीत का सेहरा मिला।

निज़ाम : साहब सचमुच बड़े बहादुर इन्सान हैं।

कार्नवालिस : **(अट्टहास)** यू आर राइट। आप जानटा- हम टीपू का आडमी को अपना कैम्प में बुलाया। ट्रिटी मटलब सुलह का टर्म्स क्या होने सकटा?

हरिपन्त : टीपू की ताकत समाप्त कर दी जाये साहब बहादुर।

निज़ाम : मैं तो टीपू के नाम से ही खौफ खाता हूँ। हुजूर उसे खत्म कर दें-बस।

कार्नवालिस : **(हंसकर)** आई सी। हम समझ गया। आपका डर हम दूर करेगा। टीपू उठने नहीं सकेगा। ही इज फिनिश्ड। **(एक सिपाही का प्रवेश। सैल्यूट करता है)**

कार्नवालिस : ह्वाट डु यू वान्ट मैन?

सिपाही : टीपू के सफीर साहब बहादुर से भेंट करना चाहते हैं।

कार्नवालिस : ब्रिंग हिम इन। आने डो।

(सिपाही का प्रस्थान। कुछ ही देर में मीरसादिक का प्रवेश। अभिवादन)

मीरसादिक़ : मैं गवर्नर-जनरल साहब को सलाम करता हूँ।

कार्नवालिस : आई ऐम हैप्पी। आपका नाम?

मीरसादिक़ : बन्दे को मीरसादिक़ कहते हैं। मैं सुल्तान टीपू का एक सिपहसालार हूँ। सुल्तान ने मुझे सुलह के लिए भेजा है।

कार्नवालिस : हम आपका नाम..........

मीरसादिक़ : जी, मीरसादिक़।

कार्नवालिस : मिस्टर मीरसाडिक, हम आपका इज्जट करटा। सुल्टान को सलाम बोलटा। लेकिन हम बहुट नाराज-वेरी ऐन्ग्री।

मीरसादिक़ : साहब, आप सारी बातें भूल जायें और सुल्तान को दोस्त बना लें।

मार्नवालिस : मिस्टर साडिक, आप नई जानटा। इस जंग में हमारा बहुट आडमी मारा गया। बहुत टाका खरचा हुआ। सुल्टान को हाफ किंगडम, मटलब आढा सल्टनट डेना होगा।

मीरसादिक़ : **(कुछ सोचकर)** मंजूर।

कार्नवालिस : हमारा बैट्ल का फुल कौस्ट मटलब टीन करोड़ टाका डेना होगा।

मीरसादिक़ : तीन करोड़?

कार्नवालिस : यस, थ्री क्रोर।

मीरसादिक़ : साहब, इतनी रकम तो सुल्तान शायद ही दे पायें।

कार्नवालिस : हम टाइम डेटा मि॰ मीरसाडिक। कुछ रुपया अब, और बाकी एक साल के भीतर। राइट।

मीरसादिक़ : हाँ, यह हो सकता है।

कार्नवालिस : जब तक फुल पेमेन्ट नहीं होने सकेगा, आपको गारन्टी माफिक कुछ डेने होगा। अन्डरस्टैण्ड?

मीरसादिक़ : वो क्या होगा?

Scanned with OKEN Scanner

कार्नवालिस : बोथ सन्स आफ सुल्टान टीपू। मटलब सुल्टान का डोनों शाहजाडा हमारा पास जामिन रहेगा।

मीरसादिक़ : यह तो बहुत ज्यादती है साहब।

कार्नवालिस : देन नो पीस। बाट नई मानेगा, सुलह नई होगा। बस। फिनिश।

मीरसादिक़ : अगर सुल्तान के कुछ खास सरदार आपके जामिन हों तो आपको क्या ऐतराज है?

कार्नवालिस : नो, नेवर। हम एश्योर करटा-शाहजाडा को हम शाहजाडा के माफिक रखेगा। सब आराम डेगा। आप सुल्टान को रास्ता पर लायेगा। आप हमारा फ्रेण्ड।

मीरसादिक़ : ठीक है, यह शर्त भी मंजूर।

कार्नवालिस : (अट्टहास) फाईन। मि॰ मीरसादिक, आप हमारा टर्म्स पर सुल्टान से सुलह करायेगा टो आपका भी फायडा होगा। आप अभी सुल्टान के पास जाकर उसका मंजूरी लायेगा टो सुलह पक्का। अदरवाइज हम लड़ाई जारी रखेगा। पैलेस पर अटैक करेगा। दोनों शाहजाडा को अपना कैम्प में अभी-अभी मांगटा। रुपया कल भेजेगा। अब आप जाना मांगटा। हम तुरत सुल्टान का मंजूरी मांगटा। थैंक यू कमान्डर।

(मीरसादिक़ का प्रस्थान। अब कार्नवालिस फिर निजाम और हरिपन्त की ओर मुखातिब होते हैं।)

कार्नवालिस : माई फ्रेण्ड्स, हम निजाम बहादर और मराठा कमान्डर को कॉन्ग्रेचुलेट करटा। हम सल्टनट में आपको भी हिस्सा डेगा। एक और टोहफा डेगा।

निज़ाम : कैसा तोहफा?

कार्नवालिस : टीपू निजाम बहादुर को हराया। टीपू का एक प्रिन्स निजाम बहादुर के महल में जामिन रहेगा।

निज़ाम : और दूसरा लड़का?

कार्नवालिस : डूसरा प्रिन्स पेशवा का पैलेस में जामिन रहेगा। क्यों मिस्टर हरिपन्ट?

हरिपन्त : साहब बहादर, सच कहता हूँ, आपकी आखिरी शर्त मुझे पसन्द नहीं आयी। मैं टीपू सुल्तान के लड़के को जामिन के रूप में हर्गिज-हर्गिज नहीं रख सकता। जीत और हार जीवन के खेल हैं। उसे इस तरह भुनाना आप जैसे लोगों को ही शोभा देता है। क्यों निजाम साहब, क्या इन्सानियत मर गयी?

निज़ाम : हरिपन्त ठीक कहते हैं। मैं भी टीपू के लड़के को जामिन की शक्ल में नहीं रख सकता।

कार्नवालिस : (हंसकर) सो गुड आफ यू। आई एप्रेशियेट योर सेन्टिमेन्ट्स। आई प्रोमिस्ड टु क्रश टीपू ऐण्ड आई हैव डन सो। टीपू विल नौट राइज अगेन। नो-नेवर। टीपू के शाहजाडा को हम रखेगा। हम।

(अंधकार। प्रकाश। कार्नवालिस टहल रहे हैं। मीरसादिक के साथ अब्दुल खालिक, उम्र आठ साल, और मुइजुद्दीन जिसकी उम्र सात साल है प्रवेश करते हैं।)

मीरसादिक़ : शहजादे, यही गवर्नर-जनरल साहब हैं। इन्हें सलाम करो।

अब्दुल खालिक : हम गवर्नर-जनरल साहब को सलाम करते हैं।

मुइजुद्दीन : हम भी गवर्नर-जनरल साहब को सलाम करते हैं।

कार्नवालिस : हम खुश। हम सुल्टान टीपू के डोनों शाहजाडे को ब्रिटिश कैम्प में वेलकम करटा। हम आपको अपना राजा मानटा। इसलिये हम सैल्यूट डेटा। **(सैल्यूट करना)**

मीरसादिक़ : हुजूर, अब तक मैसूर के सुल्तान इनके रहनुमा थे-अब्बाजान थे। लेकिन आज से हुजूर बहादुर इनके रहनुमा और अब्बाजान होंगे। ऐसा सुल्तान ने खुद कहा है।

कार्नवालिस : डोन्ट वरी मिस्टर मीरसादिक। आप सुल्टान को मेरा सलाम बोलेगा और कहेगा कि आज से ये डोनों प्रिन्स हमारा खास मेहमान होगा। इनको कोई टकलीफ नई होगा। आप चाहेगा टो बीच-बीच में डेखने आयेगा। हम इनको अपना लड़का माफिक रखेगा।

अब्दुल : जनरल साहब, हमारे अब्बा हुजूर कहते थे कि आप बड़े

Scanned with OKEN Scanner

बहादुर हैं। आपने उनको शिकस्त दी है। क्या यह सच है?

कार्नवालिस : (हँसकर) नो शाहजाडा, आपका अब्बा हुजूर हमसे ज्याडा बहादुर हाय। जंग जीटने से कोई बड़ा नहीं हो जाटा। आपके पास यह क्या होने सकटा?

अब्दुल : यह पिस्तौल है।

कार्नवालिस : पिस्टल? आप इसके काहे लाया?

अब्दुल : मेरा इरादा था कि आपसे मिलते ही मैं आपका खून कर दूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका।

कार्नवालिस : आप शूट करना मांगटा? लेकिन शूट नहीं किया। काहे?

अब्दुल : अब्बाजान ने मना कर दिया था। कहा था कि झगड़ा मेरा है, तुम्हारा नहीं। और फिर मुझे अभी-अभी लगा कि आप कितने भले आदमी हैं। यह पिस्तौल आप रख लीजिये।

(पिस्तौल जाँच कर कार्नवालिस अपने पास रख लेते हैं।)

कार्नवालिस : सो गुड आफ यू। आप इतना फीयरलेस होकर सब कुछ सच-सच बोलटा-हम बहुत खुश।

मुइजुद्दीन : हमने झूठ बोलना सीखा ही नहीं साहब।

कार्नवालिस : आप जब लौटेगा, यह पिस्टल वापस मिल जायेगा। आप डोनों ब्रदर हमसे पहले बार मिला है। हम आपको कुछ डेना मांगटा।

अब्दुल : क्या देंगे आप?

कार्नवालिस : घड़ी।

मुइजुद्दीन : घड़ी?

कार्नवालिस : हाँ, इंग्लैण्ड का बना हुआ। इसमें टाइम डेखने होगा। सोने का बना है। इसे पाकेट में रखना होटा।

(कार्नवालिस दोनों को एक-एक जेब घड़ी देते हैं।)

दोनों : शुक्रिया! शुक्रिया !!

कार्नवालिस : अब आपलोग हमारा साथ चलेगा।

(सबका प्रस्थान। मंच पर अंधेरा)

सातवाँ दृश्य

स्थान : टीपू सुल्तान का महल

(टीपू सुल्तान और पूर्निया बातें कर रहे हैं। पृष्ठभूमि में करुण संगीत)

टीपू : दीवान साहब, सब कुछ खत्म हो गया। आधी सल्तनत गयी, बेशुमार रकम देनी पड़ी, बेगम का इन्तेकाल हुआ और मेरे दो बेटे अब्दुल खालिक और मुइजुद्दीन-अंगरेजों के पास जामिन बना कर रखे गये हैं।

पूर्निया : हुजूर, हमें बहुत खराब दिन देखने पड़े हैं। लेकिन वह समय दूर नहीं जब हम अच्छे दिन देख सकेंगे। हमने अंगरेजों को पूरी रकम चुका दी है। उम्मीद है कि शाहजादे बहुत जल्द वापस लौट आयेंगे।

टीपू : बिना माँ के बेटे को हमने कड़ी सजा दी है। कोई बाप इतना संगदिल न होगा कि अपनी भलाई के लिए बेटों को जामिन बनने देगा। ओह!

पूर्निया : मैसूर के लोगों को-आपकी रियाया को-आपसे पूरी सहानुभूति है। अंगरेजों को रकम चुकाने के लिए शाही खजाने में लोगों ने भरपूर दान दिया। अब मैसूर की काया बदल रही है। किले की दीवारों की मरम्मत हो रही है, खेतों में हरियाली छायी है। उद्योग-धन्धों का विकास हो रहा है। शहर में एक बार फिर रौनक आ गयी है। बीते पर सोच कर क्या होगा। हमें आगे देखना है।

Scanned with OKEN Scanner

टीपू : आपका कहना सही है दीवान साहब। सुना है, कार्नवालिस विलायत लौटनेवाला है। नया गवर्नर-जनरल पता नहीं कैसा आदमी होगा।

पूर्निया : हुजूर, कोई भी आये। मकसद एक ही होगा। ब्रिटिश शासन का विस्तार करना। यहाँ के शासकों में फूट पैदा करना और अपना काम निकालना। देशी राजाओं का अगर यही हाल रहा तो बहुत जल्द अपने मुल्क का नक्शा लाल होकर रहेगा।

टीपू : आप सही फर्माते हैं दीवान साहब।

आठवाँ दृश्य

स्थान : ब्रिटिश कैम्प समय : सुबह

(वेलेस्ली शराब ढाल रहे हैं। मीरसादिक पास में खड़े हैं।)

मीरसादिक़ : नये गवर्नर-जनरल साहब को मीरसादिक़ सलाम करता है।

(मीरसादिक सलाम करते हैं। वेलेस्ली हाथ बढ़ाते हैं। हाथ मिलाना।)

वेलेस्ली : आप मिस्टर मीरसाडिक? हम बहुत टाइम से आपको सर्च करने मांगटा। लार्ड कार्नवालिस विलायट जाने का टाइम एक लेटर डिया। उसमें आपका बहुत टारीफ।

मीरसादिक़ : कार्नवालिस साहब मेरे ऊपर बहुत मेहरबान थे हुजूर। मैंने भी उनकी बहुत मदद की।

वेलेस्ली : आई सी। (शराब ढालता है) हैव ए पेग।

मीरसादिक़ : हुजूर, हम अपने मालिकों के सामने नहीं पीते।

वेलेस्ली : नो मालिक। आप हमारा फ्रेण्ड। हैव ए पेग।

मीरसादिक़ : जब आप कहते हैं तो..... (पीता है-वेलेस्ली हंसता है।)

वेलेस्ली : हाऊ इज इट? कइसा हाय?

मीरसादिक़ : बहुत कड़वी..... नहीं नहीं; बहुत ठीक हुजूर।

वेलेस्ली : हाँ, आप बोलटा..... कार्नवालिस का मडड किया। डिड यू हेल्प हिम? हाऊ?

मीरसादिक़ : हुजूर वो हमे बहुत मानते थे। मैं भी उनकी बड़ी इज्जत

Scanned with OKEN Scanner

करता था। सुल्तान टीपू की सारी खबरें उन्हें दिया करता था। जी।

वेलेस्ली : हाऊ डू यू क्लेक्ट दि इन्टेलिजेन्स? आप टीपू का खबर कैसे माफिक जानटा?

मीरसादिक़ : हुजूर, मैं उनका एक खास सिपहसलार हूँ। हर बात में वो हमसे राय-मशविरा लेते हैं। उनके मन की बात भी मैं जानता हूँ।

वेलेस्ली : गुड। आई नीड ए मैने लाइक यू। हम आपको पसन्ड करटा। **(शराब ढालना)** हैव अनदर पेग माई फ्रेण्ड। प्योर इंगलिश वाइन।

मीरसादिक़ : **(पीते हुए)** हुजूर, मेरे ही इशारे पर कार्नवालिस साहब ने टीपू को बर्बाद कर दिया।

वेलेस्ली : कार्नवालिस थौट दैट ही हैड क्रश्ड टीपू, बट ही वाज रौंग।

मीरसादिक़ : हम समझे नहीं साहब।

वेलेस्ली : कार्नवालिस का ख्याल में टीपू फिनिश हो गया। लेकिन टीपू फिनिश नहीं हुआ।

मीरसादिक़ : हुजूर, बात ऐसी है कि टीपू का जोश मर गया है।

वेलेस्ली : लेकिन टीपू जिन्डा हाय। ऐम आई रौंग?

मीरसादिक़ : आप सही कहते हैं।

वेलेस्ली : **(समझाते हुए)** लेकिन हम टीपू को जिन्डा रहने नहीं डेगा। ही इज दि ग्रेटेस्ट टेरर टू ईस्ट इण्डिया कम्पनी। हम जानटा-टीपू इज प्रिपेयरिंग फौर ए फ्रेश कनफन्ट्रेशन। उसका मडड कौन करटा?

मीरसादिक़ : नहीं मालूम।

वेलेस्ली : हाम जानटा। फ्रेन्च। उसका कारेसपौन्डेन्स यूरोप के नेपोलियन बोनापार्ट से होटा। नेपोलियन इण्डिया आयेगा? नो, नेवर। टीपू टर्की के सुल्टान से भी फ्रेन्डशिप किया। अफगानिस्टान का जमानशाह भी टीपू का फ्रेन्ड। लेकिन हाम सबको डेखने सकेगा। आप एक बाट जानटा?

मीरसादिक़ : क्या?

वेलेस्ली : हम टीपू के पास कुछ प्रोपोजल भेजा। हाम बोला हमारा सबसीडयरी एलायन्स में शामिल हो जाओ। आप मटलब समझा?

मीरसादिक़ : नहीं हुजूर।

वेलेस्ली : मटलब टुम कम्पनी से मेल कर लो। हमारा ट्रूप्स टुमको डुस्मन से बचायेगा। हमारा फौज टुम्हारे पास रहेगा। मेरा रेजिडेन्ट टुमारे पास रहेगा। हम मडड करेगा। फ्रेंच से डोस्टी खटम करने होगा।

मीरसादिक़ : मैसूर के सुल्तान क्या बोले?

वेलेस्ली : सुल्टान ऐग्री नई होटा। हमारा बाट सब राजा मान लिया। लेकिन टीपू डज़ नौट एग्री। अनफौरचुनेट फेलो।

मीरसादिक़ : फिर क्या होगा हुजूर?

वेलेस्ली : बैट्ल, बीटर फाइटिंग। जंग और उसके बाड क्या होगा-आप जानटा?

मीरसादिक़ : नहीं हुजूर।

वेलेस्ली : उसके बाड टीपूज एण्ड। टीपू खटम। हम उसको जिन्डा नई मांगटा मैन। इस खेल को हमेशा के लिए खटक करेगा। आप जानटा? हमको इंग्लैण्ड का प्राइम मिनिस्टर पिट बोला-गो टु इण्डिया, फिनिश टीपू ऐण्ड एक्सपैण्ड दि ब्रिटिश अम्पायर। हम इण्डिया में ब्रिटिश रूल मांगटा। आप मडड करेगा टो हम कम्पनी में आपको ऊंचा पोस्ट डेगा।

मीरसादिक़ : समझ गया हुजूर। आप जो कहेंगे, मैं करूँगा।

वेलेस्ली : आप टीपू का सब खबर हमको डेगा। बस।

मीरसादिक़ : आप फिक्र न कीजिये। मैं सारी खबरें आपको देता रहूँगा। अगर जंग होगी तो मैं लड़ूंगा टीपू की तरफ से, लेकिन काम आपका करूँगा।

वेलेस्ली : हम जानटा-जंग होगा और जल्ड होगा। थैंक यू मिस्टर मीरसाडिक। विश यू वेल। एक पेग हमारा टरफ से-ईस्ट इंडिया कम्पनी के टरफ से। **(शराब ढालता है।)**

Scanned with OKEN Scanner

नौवाँ दृश्य

स्थान : श्रीरंगपट्टन दुर्ग के निकट का एक भाग
समय : दोपहर के बाद

(युद्ध हो रहा है। तोपों और बन्दूकों की आवाज। रक्ताक्त टीपू सुल्तान का प्रवेश। हाथ में नंगी तलवार। एक ऊँचे स्थान पर खड़े होकर सिपाहियों को संबोधित करते हैं।)

टीपू : **(चीखते हुए)** सिपाहियों, ये गैरमुल्की लोग तुम्हारे वतन को गुलाम बनाना चाहते हैं। जरा सोचो। जरा समझो। यह है तुम्हारा मादरे वतन जिसकी गोद में तुम खेले। आज इस पर जुल्म हो रहा है। तुम हिन्दू हो या मुसलमान। अपने वतन को बचाओ। तुम्हारा खून बेकार नहीं जायेगा।

पूर्निया : **(दूर से)** किले की दीवारों में दरारें पड़ गयी हैं। हम क्या करें?

टीपू : उन दरारों के सामने खड़े हो जाओ। मरना एक दिन सबको है। समझ लो वह पाक रोज आज ही है। देखो सामने, दुश्मन तुम्हारे घरों में आग लगा रहे हैं। उन पर हमला करो। आगे बढ़ो। दीवान पूर्निया, मीरसादिक को कहिये कि किले के फाटक से किसी को अन्दर नहीं जाने दे। **(पूर्निया का प्रवेश)**

पूर्निया : हुजूर, गजब हो गया।

टीपू : क्या हुआ?

पूर्निया : हुजूर, उस फाटक पर के सिपाही तनखाह लेने गये हुए हैं?

टीपू : तनखाह? यहाँ मौत सामने खड़ी है और सिपाहियों को तनखाह की पड़ी है। किसने उन्हें इसकी इजाजत दी?

पूर्निया : खुद सिपहसालार मीरसादिक ने।

टीपू : नमकहराम मीरसादिक। तुमने यह गद्दारी की है।

पूर्निया : हुजूर, मीरसादिक अंगरेजों से मिला है और मैसूर की बर्बादी चाहता है। आप चिन्ता न करें। मैं उधर जाता हूँ। **(प्रस्थान)**

टीपू : हमारी जीत मुश्किल है। जब मीरसादिक जैसे लोग घर में हों तो हार तय है। इन गोरों ने मेरी बर्बादी का पूरा इन्तेजाम किया है। मुल्क में इतनी छोटी बड़ी रियासतें हैं। लेकिन हमारी मदद के लिये कोई रियासत आगे नहीं आई। मराठे और निजाम भी गोरों से मिले हैं। लेकिन टीपू टूट सकता है, झुक नहीं सकता **(प्रस्थान)**

(एक ओर से मीरसादिक का और दूसरी ओर से पूर्निया का प्रवेश)

पूर्निया : कौन? सिपहसालार मीरसादिक?

मीरसादिक़ : हाँ, दीवान साहब। मैं मीरसादिक हूँ। आप देखते नहीं, हवा किस तरफ बह रही है?

पूर्निया : जानता हूँ, हवा अंगरेजों के पक्ष में बह रही है।

मीर : आपने सही समझा है। टीपू सुल्तान की शिकस्त तय है। आपने-अपने बारे में क्या सोचा है?

पूर्निया : नवाब हैदरअली की मौत के बाद हमने कसम खाई थी कि अन्त-अन्त तक हम टीपू की मदद करेंगे। तुमने भी तो कसम खाई थी। याद है?

मीरसादिक़ : अच्छी तरह याद है। लेकिन हवा के साथ पीठ रखना अक्लमंदी है। चुनांचे मैं अंगरेजों के साथ हूँ।

पूर्निया : इसीलिये तुमने सिपाहियों को तनखाह लेने के लिये छुट्टी दे दी है। ऐन युद्ध के समय सिपाहियों को छुट्टी देना

Scanned with OKEN Scanner

गद्दारी नहीं तो क्या है? किले की दीवारों में दरारें पड़ गयी हैं। उनकी मरम्मत का कोई इन्तेज़ाम नहीं हुआ। नतीजतन दुश्मन किले में, उन दरारों से, भीतर जा रहे हैं। ये सब तुम्हारी साज़िश है।

मीरसादिक़ : आपने ठीक समझा वज़ीर साहब। अब मैं आपसे पूछता हूँ कि आपने अपने लिये कौन सा रास्ता चुना है?

पूर्निया : मुझे अपनी कसम अच्छी तरह याद है। मैं जीऊँगा तो टीपू सुल्तान के लिये, मरूँगा तो टीपू सुल्तान के लिये।

मीरसादिक़ : मैं जानता था कि आप टीपू का साथ नहीं छोड़ेंगे।

पूर्निया : मैं तुम्हारी तरह नमकहराम नहीं हूँ मीरसादिक।

मीरसादिक़ : आपकी ईमानदारी से कुछ होने वाला नहीं है। अंगरेज इस जंग में फतेहयाब होंगे और टीपू सुल्तान की शिकस्त होगी। अब तक के हालात यही बता रहे हैं।

पूर्निया : जिस मुल्क में तुम्हारे जैसे ग़द्दार हों, उसका भविष्य अन्धकारमय ही होगा।

मीरसादिक़ : और जिस मुल्क में आप जैसे खुशामदी लोग होंगे उसका यही हश्र होगा जो आप देख रहे हैं। लेकिन आप मेरे हाथ से बच नहीं सकते दीवान साहब।

पूर्निया : यहाँ तक। तुम मुझ पर वार करोगे मीरसादिक?

मीरसादिक़ : अगर आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो मुझे यही करना पड़ेगा।

पूर्निया : क्या चाहते हो?

मीरसादिक़ : आप मेरे साथ अंगरेज कमान्डर जनरल हैरिस के पास चलें। टीपू जायेगा, लेकिन आपकी वज़ारत बनी रहेगी।

पूर्निया : असम्भव। मैं वैसा कोई काम नहीं करूँगा जो मैसूर के या मैसूर के सुल्तान के खिलाफ होगा।

मीरसादिक़ : दीवान पूर्निया, अपनी उम्र का ख्याल कीजिये। मैं फिर कहता हूँ।

पूर्निया : मीरसादिक, तुम मुझे धमकी दे रहे हो।

मीरसादिक़ : हाँ, आप अगर अपनी जान की सलामत चाहते हों तो मेरी

बात मान लीजिये वरना मुझे आपका खून करना पड़ेगा।

पूर्निया : तुम शायद इन बूढ़ी हड्डियों की ताकत आजमाना चाहते हो?

(पूर्निया तलवार निकाल कर मीरसादिक पर हमला करता है। युद्ध। मीरसादिक घायल होकर गिरता है।)

मीरसादिक़ : ओह! दीवान पूर्निया, मुझे अपनी गलती की सजा मिली। आप मुझे माफ करें। सुल्तान.....पर....खतरा है। आह।

(मृत्यु)

(टीपू का प्रवेश। वो बुरी तरह घायल हो चुके हैं। पूर्निया आगे बढ़कर टीपू को संभालते हैं।)

टीपू : दीवान साहब, इस बर्बादी की जड़ में मीरसादिक है। उसने हम सबको धोखा दिया है। कहाँ है वह शैतान?

पूर्निया : उसकी सज़ा उसे मिल चुकी है सुल्तान। सामने पड़ी है उस कमीने की लाश। आपकी तरफ से यह सज़ा मैंने उसे दी है।

टीपू : अच्छा किया आपने दीवान साहब। लाल बाग़ में मरहूम नवाब हैदरअली की रूह रो रही है। उस बहादुर पर अंगरेजों की तोपों के गोले गिर रहे हैं। आज मैसूर रो रहा है, सारा हिन्दुस्तान रो रहा है। आज जो आँसू निकल रहे हैं, कल ये शोले बन जायेंगे। कुछ वक्त लगेगा। और उन शोलों में अंगरेज जल मरेंगे।

(एक अंगरेज सैनिक का प्रवेश। वह पिस्तौल से गोली चलाता है। गोली टीपू को लगती है। टीपू गिरते-गिरते भी अपनी तलवार से उस सैनिक पर हमला करता है। सैनिक और टीपू गिरते हैं। प्राणान्त। पूर्निया सिर झुका कर टीपू के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं। अंधकार।)

-- समाप्त --

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्भुज-साहित्य

नाटक	: रावण, सिकन्दर-पोरस, पीरअली, झांसी की रानी, शिवाजी, मुद्राराक्षस, शकुन्तला, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बहादुरशाह, नूरजहाँ, अरावली का शेर, कुँवर सिंह, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, मोर्चे पर, कंस-वध, श्रीकृष्ण, कलिंग-विजय, कृष्णकुमारी, कर्ण, मेघनाद, भगवान बुद्ध, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, कालसर्पिणी, बाबू विरंचीलाल, टीपू सुल्तान, विजय-तिलक (एकांकी-संग्रह), झेलम के किनारे (एकांकी-संग्रह), नदी का पानी एवं अन्य नाटक।
उपन्यास	: समुद्र का पक्षी (ऐतिहासिक), राजदर्शन, (ऐतिहासिक), सम्यक सम्बुद्ध (ऐतिहासिक)।
कहानी-संग्रह	: कमरे की छाया, इतिहास बोल उठा
इतिहास	: औरंगजेब
अंगरेजी में	: Memoirs of William Tayler of 1857, The Great Historical Dramas, The Rani of Jhansi, History of the Great Mughals.

अन्य साहित्य

पत्रकारिता-जगत : लेखक-अशोक प्रियदर्शी और सुनील कुमार सिन्हा (मूल्य-60/-)

नेहरू को अपना कानूनी वारिस मैंने कभी नहीं कहा : गाँधी विचार : लेखक-सुनील कुमार सिन्हा (मूल्य-15/-)

मगध कलाकार प्रकाशन

106, श्रीकृष्णनगर, रोड-6, पटना-800 001

Scanned with OKEN Scanner

डॉ० चतुर्भुज

एम०ए०, पी-एच०डी०

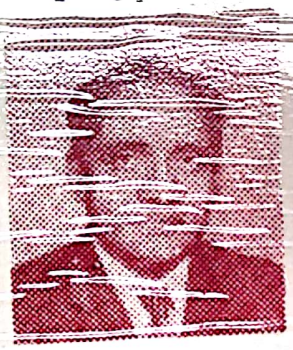

जन्म 1928 ई०। पालि और बौद्ध साहित्य में एम०ए०। नालन्दा में रहकर बौद्ध साहित्य का अध्ययन। हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देखकर नाटक-लेखन और अभिनय की ओर प्रवृत्त। 'मगध कलाकार' (मगध आर्टिस्ट्स) नामक नाट्य संस्था की स्थापना 1952 ई० में जिसका मुख्य उद्देश्य है ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और पौराणिक नाटकों का मंचन। 'मीरकासिम' नाटक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। रेलवे की सेवा की। फिर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा में कई वर्षों तक रहे। इतिहास, पुराण और बौद्ध साहित्य से सम्बन्धित हिन्दी और अंगरेजी में अनेक पुस्तक और लेख प्रकाशित। आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक पद से सेवा निवृत्त। नाटक के प्रचार-प्रसार, पठन-पाठन के लिए संघर्षशील। इनके प्रयास से ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र का अध्यापन, जहां ये प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में रहे। रंगमंच, टी.वी. और रेडियो के सफल लेखक, निर्देशक और कलाकार के रूप में बहुचर्चित।

VATAYAN, Patna-1, Ph.: 227390, 254120